शुद्ध उपयोग, जागृति पूर्वक

संपादकीय

स्वरूप ज्ञान की प्राप्ति के बाद, 'मैं शुद्धात्मा हूँ', का लक्ष्य बैठ जाने के बाद महात्मा केवल ज्ञान की तरफ आविरत रूप से कूच करते रहें, उसके लिए संपूज्य दादाश्री ने तरह-तरह के रास्ते बताए हैं। उसके लिए निरंतर शुद्ध उपयोग में रहना अनिवार्य है। आत्मजागृति में तो ज्ञान विधि के बाद दादा की कृपा से आसानी से निरंतर रहा जाता है लेकिन पुरुषार्थ में रहकर निरंतर शुद्ध उपयोग में रह पाएंगे तभी यथार्थ प्रगति होगी। 'ज्ञान पूरा ही समझ में आ गया है, निरंतर आज्ञा में ही रहना है, फिर भी रह नहीं पाते' बार-बार ऐसा होता रहता है लेकिन उसका कारण और निवारण नहीं मिल पाता इसलिए उलझ जाते हैं। उसका मुख्य कारण और निवारण इस अंक में बहुत ही अच्छी तरह से सुंदरता पूर्वक प्रस्तुत हुआ है।

जागृति किसे कहते हैं? उपयोग किसे कहते हैं? जागृति और उपयोग का क्या संबंध है? उपयोग कितने प्रकार के होते हैं? ज्ञान के बाद शुद्ध उपयोग किस प्रकार से सेट करना चाहिए? पूर्ण शुद्ध उपयोग का मतलब क्या है? विषय विकार रहित उपयोग और विषय विकार सहित उपयोग क्या- क्या है ?

और अंत में ज्ञानी पुरुष और तीर्थकरों की दशा में शुद्ध उपयोग पर भी उपयोग किस प्रकार का होता है? वह सारा विवरण यहाँ पर परम पूज्य दादाश्री की अनुभव ज्ञान वाणी द्वारा हमें प्राप्त होता है। अधिकतर महात्मा विषय कषाय रहित वाले उपयोग में रहते हैं लेकिन शुद्ध उपयोग चूक जाते हैं। उसे सूक्ष्मता से समझकर सेट कर लेने पर शुद्ध उपयोग में रहा जा सकता है उसके लिए यह अंक महात्माओं के लिए बहुत बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगा।

- जय सच्चिदानंद

उपयोग के प्रकार

इस देह के साथ में आत्मा है, तो आत्मा का उपयोग रहना चाहिए। आत्मा के 'उपयोग' के बिना 'सुख' तो उत्पन्न होगा ही नहीं। मनुष्य चार प्रकार के उपयोग कर रहे हैं। ये जानवर आत्मा का उपयोग नहीं करते। उपयोग सिर्फ अहंकारियों को ही है। जानवर तो सहज भाव में है। गायों, भैंसों को सहज भाव रहता है कि यह खा सकते हैं और यह नहीं खा सकते।

आत्मा के चार उपयोग हैं। अशुद्ध उपयोग, अशुभ उपयोग, शुभ उपयोग और शुद्ध उपयोग।

उपयोग चार प्रकार के हैंः.

(१) अशुद्ध उपयोग: कोई व्यक्ति अकारण हिरण का शिकार करता है, वह भी सिर्फ शिकार करने का आनंद लेने के लिए ही और फिर गर्व करता है कि मैंने कैसा मारा! किसी हेतु के बिना यदि सिर्फ मौज मजे के लिए ही मारता है, तो वह आत्मा का अशुद्ध उपयोग है। किसी का घर जला कर गर्व ले, गलत करके हंसता है, सामने वाले का नुकसान करके और फिर मूँछ पर ताव देता है- ये सब थर्ड क्लास के पैसेंजर, उसका फल है नर्क गति।

(२) अशुभ उपयोग: घरवाले कहें कि आज तो हिरण खाना पड़ेगा क्योंकि घर में खाने को और कुछ भी नहीं है। बीवी बच्चे भूख से बिलबिला रहे हों और वह हिरण मार कर घर में ला कर देता है लेकिन अंदर अपार दुख होता है, पश्चाताप होता है कि मैंने जो किया, वह गलत किया। तो वह आत्मा का अशुभ उपयोग है। अशुद्ध और अशुभ उपयोग में क्रिया एक समान ही होती है लेकिन फिर भी एक अपनी की हुई क्रिया पर गर्व करता है, खुश होता है जबकि दूसरा पश्चाताप के आंसू रोता है, इतना फर्क है। और फिर अशुभ उपयोग अर्थात् कपट करता है, मिलावट करता है, स्वार्थ के लिए झूठ बोलता है, क्रोध-मान-माया-लोभ करता है, वह सारा अशुभ उपयोग है। ये सभी अशुभ उपयोग वाले जीव सेकंड क्लास वाले हैं। तिर्यच गति बांधते हैं।

(३) शुभ उपयोग: शुभ उपयोग में घरवाले भूख से बिलबिला रहे हों फिर भी वह तो ऐसा ही कहता है कि किसी को मारकर मुझे भूख नहीं मिटानी है। वह शुभ उपयोग है। शुभ उपयोग अर्थात् मन की शक्ति, वाणी की, शरीर की, अंतःकरण की सारी शक्ति का उपयोग औरों के लिए होता है। औरों के लिए अच्छी भावना रखता है, लोगों का भला करता है, ओब्लाइज करता है। सच्चा नीतिमय दिल रखता है। वह शुभ उपयोग है। सिर्फ शुभ उपयोग तो किसी-किसी को ही रहता है। सभी जगह शुभाशुभ उपयोग ही रहता है। शुभाशुभ उपयोग वाला है, फर्स्ट क्लास पैसेंजर - उसका फल है मनुष्य गति। जब सिर्फ शुभ उपयोग में ही रहे तो वह तो एयर कंडीशन सलून का पैसेंजर- देव गति पाता है।

(४) शुद्ध उपयोग: शुद्ध उपयोग किसे कहते हैं? शुद्ध उपयोगी शुद्ध को ही देखता है, अंदर वाले माल को देखता है। पैकिंग को नहीं देखता। तत्व दृष्टि से देखना, उसे कहते हैं शुद्ध उपयोग। शुद्ध उपयोग आत्मा प्राप्त करने के बाद ही शुरू होता है। उपयोग जब संपूर्ण हो जाता है तब केवल ज्ञान होता है। शुद्ध उपयोग का फल है मोक्ष।

ये दो उपयोग हितकारी हैं

जागृति पूर्वक के उपयोग दो प्रकार के हैं: एक शुभ उपयोग होता है और दूसरा शुद्ध उपयोग। जगत में शुद्ध उपयोग नहीं है लेकिन शुभाशुभ उपयोग होता है और किसी को अशुद्ध उपयोग भी होता है। इस अशुभ उपयोग और अशुद्ध उपयोग को उपयोग नहीं माना जाता। शुभ उपयोग और शुद्ध उपयोग को ही उपयोग माना जाता है। अशुद्ध और अशुभ को तो सिर्फ पहचानने के लिए ही ऐसा कहा जाता है कि यह किस प्रकार का उपयोग है। अशुभ उपयोग और अशुद्ध उपयोग ये सब 'मेकेनिकल' है और शुभ उपयोग में आंशिक जागृति रहती है। इस भव और परभव का हित किसमें हैं, ऐसी जागृति रहती है।

खुद के घर के बारे में, व्यापार के बारे में और अन्य किसी बारे में जागृति रहती है, लेकिन वह जागृति इतने में ही रहती है और बाकी सब जगह पर सोता है। लेकिन वास्तव में इस जागृति को भी 'मेकेनिकल' ही कहा जाएगा।

'मेकेनिकल' कब छूटता है? जब खुद का हित और अहित, दोनों निरंतर जागृति में रहें, तब 'मेकेनिकल' छूटता है।

प्रश्नकर्ता - लेकिन दादा हित और अहित दोनों भौतिक में आते हैं?

दादाश्री - ऐसा नहीं है। शुभ मार्ग में भी जागृति कही जाती है। लेकिन वह कब? जब इस भव में और पर-भव में लाभकारी हो, ऐसा शुभ हो, तब उसे जागृति कहा जाता है। वरना वह दान देता है, सेवा करता है, लेकिन आगे की उसे बिल्कुल भी जागृति नहीं होती। जागृति पूर्वक सभी क्रिया करे तो अगले जन्म का हित होता है वरना सब निद्रा में ही जाता है। यह दान किया, वह सारा निद्रा में गया। जागते हुए चार आने भी जाएँ तो बहुत हो गया। यहाँ पर दान दे और अंदर यहाँ की कीर्ति की इच्छा हो तो वह सब निद्रा में गया। जो पर-भव के हित के लिए यहाँ पर दान देता है, वह जागृत कहलाता है। हिताहित का भान अर्थात् खुद का हित किसमें है और खुद का अहित किसमें है, उस अनुसार जागृति रहे। अगले जन्म का कोई ठिकाना न हो और यहाँ पर दान दे तो उसे जागृत कैसे कहेंगे?

स्पष्टीकरण, मेकेनिकल और जागृति का

प्रश्नकर्ता- 'मेकेनिकल' और 'जागृति पूर्वक' के बीच का फर्क समझाइए।

दादाश्री - पूरी दुनिया नींद में चल रही है। वह सारा 'मेकेनिकल' कहलाता है। उसे भाव निद्रा कहा गया है। ये भाव निद्रा वाले तो सभी 'मेकेनिकल' हैं, ऐसा कहा जाएगा। अब हर एक व्यक्ति व्यापार में, फायदे नुकसान में जागृत है या नहीं? यानी कि व्यापार करते हुए उसमें जागृति पूर्वक रहता है और बस में बैठते समय इंसान जागृत रहता है या नहीं? वहाँ पर 'मेकेनिकल' नहीं रहता, जागृति पूर्वक रहता है। अब जगत इसे जागृति पूर्वक कहता है। वास्तव में तो यह 'मेकेनिकल' ही है।

फॉरेन में काफी कुछ लोग ऐसे 'मेकेनिकल' ही कहलाते हैं। ये जानवर और तिर्यच, ये सभी 'मेकेनिकल' कहलाते हैं न?

प्रश्नकर्ता - ये देवी देवता भी 'मेकेनिकल' कहलाते हैं?

दादाश्री - देवी देवता 'मेकेनिकल' नहीं कहलाते। उनमें जागृति है। कुछ देवी देवता तो ऐसे हैं कि उन्हें पता चलता है कि वे खुद 'मेकेनिकल' में रह रहे हैं। इसलिए उन्हें उस चीज़ से परेशानी होती है कि, 'ऐसी अवस्था नहीं होनी चाहिए।' सभी देवी देवता

ऐसे नहीं होते। उनमें से कितने तो ऐसे होते हैं कि बस, मस्त होकर घूमते रहते हैं। वे 'मेकेनिकल' कहलाते हैं।

जहाँ शुभाशुभ, वहाँ संसार

अज्ञान दशा में भी इंसान आत्मा का शुद्ध उपयोग कर सकता है। जब गलत हो जाए तब शास्त्रों के आधार पर, 'ऐसा नहीं करना चाहिए', ऐसा कहे तो वह आत्मा का सदुपयोग कहा जाएगा। मंदिर या देरासर में जाए, शास्त्र पढ़े, तो वह सारा शुभ उपयोग कहा जाएगा।

विषयों में उपयोग कपट करने में ही रहता है। वह अशुभ उपयोग कहलाता है। लोभी को लोभ का उपयोग रहा करता है, मानी को मान का उपयोग रहा करता है। संसरियों को ये दो प्रकार के मोटे उपयोग रहते हैं। मानी यदि विवाह में जाए और कोई जल्दबाज़ी में हाथ जोड़कर नमस्कार करना भूल जाए तो छाती बैठ जाती है। 'इसे ऐसा कर दूंगा और वैसा कर दूंगा', ऐसा करता है, उससे अंदर भयंकर अशुभ उपयोग होता है। लोभी जब सब्जी लेने जाता है तब उसका उपयोग इसी में रहता है कि कौन सी ढेरी सस्ती है। वह सड़ा हुआ ही ले आता है।

जहाँ 'शुद्ध उपयोग,' वहाँ मोक्ष !

जिसे वितरागों के मार्ग पर चलना है उसे अशुभ में से शुभ का उपयोग रखना चाहिए, और जिसे मोक्ष में जाना हो उसे शुद्ध उपयोग रखना चाहिए। जिसे मोक्ष में जाना हो उसे शुभाशुभ की झंझट में नहीं पड़ना चाहिए। दोनों को ही निकाली रखना है।

'मैं चंदू भाई हूँ' वह शुभाशुभ उपयोग। शुभाशुभ के उपयोग से संसार में प्रतिष्ठा हुई। 'मैं शुद्ध आत्मा हूँ' वह शुद्ध उपयोग है। लेकिन जब तक ज्ञानी पुरुष शुद्ध नहीं करवाएँ तब तक शुद्ध किस प्रकार से हो सकता है? ज्ञानी पुरुष के शुद्ध करवाने के बाद में आप मैं शुद्ध उपयोग उत्पन्न होता है, तब वह शुद्ध कहलाता है। निरंतर खुद का 'शुद्ध' देखें और दूसरों का भी 'शुद्ध' देखें तो वह है शुद्ध उपयोग।

शुद्ध उपयोग अर्थात् जब सामने वाले के आत्मा और शरीर को अलग देख सके। निरंतर ऐसा ध्यान रहे कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ,' तो वह शुक्ल ध्यान है। शुद्ध उपयोग संपूर्ण चरित्र का कारण है, अंत तक का चरित्र, जिसमें भगवान थे।

उपयोग किसका

प्रश्नकर्ता : आत्मा का उपयोग, 'शुद्धात्मा' का है या 'प्रतिष्ठित आत्मा' का?

दादाश्री : प्रथम तीन उपयोग प्रतिष्ठित आत्मा के हैं और शुद्ध उपयोग शुद्धात्मा का है, और वह भी वास्तव में प्रज्ञा का है। इस उपयोग में मूल आत्मा खुद कर्ता नहीं है।

उपयोग यानि क्या? जागृति यानि क्या?

प्रश्नकर्ता : उपयोग और जागृति, ये दोनों समझाइए।

दादाश्री : जागृति को किसी जगह पर फोकस करने को उपयोग कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : उपयोग और जागृति, इन दोनों में क्या फर्क है?

दादाश्री : अगर यहाँ पर फानूस (लालटेन) हो तो उन सीढ़ी वाले लोगों को क्या लाभ होगा? यदि सीढ़ी चढ़नी हो तो फानूस से क्या लाभ होगा? तो वहाँ पर रखना होगा। तब उसे उपयोग कहा जाएगा। फानूस जागृति है।

जागृति कहीं और न चली जाए जैसे कि संसार के फायदे नुकसान में या एक ही जगह पर जागृति को फिक्स रखे, वह उपयोग। जहाँ पर जागृति बरतती है, वह उपयोग; लेकिन वह उपयोग शुभाशुभ का उपयोग कहा जाता है और शुद्ध उपयोग उसे कहते हैं कि जो उपयोग शुद्धात्मा के लिए ही सेट किया गया हो।

शुद्धता बरते, इसलिए 'शुद्धात्मा' कहा है

प्रश्नकर्ता : आपने शुद्धात्मा क्यों कहा है? सिर्फ आत्मा ही क्यों नहीं कहा? आत्मा भी चेतन तो है ही ना?

दादाश्री : शुद्धात्मा अर्थात् शुद्ध चेतन ही. शुद्ध इसलिए कहा है कि पहले मन में ऐसा लगता था कि 'मैं पापी हूँ, मैं ऐसा नालायक हूँ, मैं ऐसा हूँ, मैं वैसा हूँ'। खुद के लिए ऐसे जो आरोप थे, वे सभी आरोप निकल गए। शुद्धात्मा के बजाय यदि सिर्फ 'आत्मा' कहेंगे तो खुद की शुद्धता का भान भूल जाएगा। निर्लेपता का भान चला जाएगा, इसलिए 'शुद्धात्मा' कहा।

प्रश्नकर्ता : तो शुद्धात्मा का मर्म क्या है?

दादाश्री : 'शुद्धात्मा' का मर्म, वह असंग है, निर्लेप है; जब कि 'आत्मा' (व्यवहार आत्मा) वैसा नहीं है। 'आत्मा' लेपवाला है और 'शुद्धात्मा' तो परमात्मा है। सभी धर्म वाले कहते हैं कि 'मेरा आत्मा पापी है', फिर भी शुद्धात्मा को कोई हर्ज़ नहीं है।

शुद्धात्मा यही सूचित करता है कि अब हम निर्लेप हो गए हैं, पाप चले गए हैं सारे। यानी कि शुद्ध उपयोग के लिए शुद्धात्मा कहा है। वर्ना 'आत्मा' वाले को तो शुद्ध उपयोग की ज़रूरत ही नहीं है। आत्मा तो, सभी आत्मा ही है! लेकिन जो शुद्ध उपयोगी होता है, उसे शुद्धात्मा कहा जाता है। आत्मा तो चार प्रकार के हैं; अशुद्ध उपयोगी, अशुभ उपयोगी, शुभ उपयोगी और शुद्ध उपयोगी, ऐसे सारे आत्मा हैं। यदि सिर्फ 'आत्मा' बोलेंगे, तो इनमें से कौन सा आत्मा? तब कहते हैं, 'शुद्धात्मा'। यानी कि शुद्ध उपयोगी, वह शुद्धात्मा होता है। और फिर अब उपयोग शुद्ध रखना है। उपयोग शुद्ध रखने के लिए शुद्धात्मा है, वर्ना उपयोग शुद्ध रहेगा नहीं ना!!

एक व्यक्ति ने पूछा कि, 'दादा, सभी जगह आत्मा कहलवाते हैं और आप ही शुद्ध आत्मा कहलवाते हैं, ऐसा क्यों?' मैंने कहा कि 'यह जो आत्मा कहते हैं वह आत्मा है ही नहीं और हम शुद्धात्मा कहते हैं, उसका कारण अलग है।' हम क्या कहते हैं कि तुझे एक बार 'रियालाइज' करवा दिया है कि 'तू शुद्धात्मा है और यह चंदू भाई अलग हैं'। ऐसा तुझे बुद्धि से भी समझ में आ गया। अब चंदू भाई से खराब से खराब काम हो जाए, लोग निंदा करें ऐसा काम हो जाए, तो उस समय तुझे 'मैं शुद्धात्मा हूँ' का लक्ष नहीं चूकना चाहिए और कभी भी ऐसा मत मानना कि 'मैं अशुद्ध हूँ'। ऐसा समझने के लिए 'शुद्धात्मा' कहना पड़ता है। 'तू अशुद्ध हुआ ही नहीं है' इसलिए कहना पड़ता है। हमने जो शुद्धात्मा पद दिया है, फिर वह शुद्धात्मा पद - शुद्ध पद फिर बदलता ही नहीं है। इसलिए शुद्ध शब्द रखा है। अशुद्ध तो, यह शरीर है इसलिए अशुद्धि तो होती ही रहेगी। किसी में ज्यादा अशुद्धि होती है तो किसी में कम अशुद्धि होती है, वह तो

होती ही रहेगी। और उसके लिए फिर खुद के मन में बैठ जाता है कि 'मुझे तो दादा ने शुद्ध बनाया है फिर भी अभी तक अशुद्धि तो रही हुई है'। और यदि ऐसा मन में बैठ गया तो फिर बिगड़ जाएगा।

शुद्ध उपयोग के अभ्यास

तो अब स्वरूप ज्ञान की प्राप्ति के बाद आपको क्या करना है?

आपको अब उपयोग रखना है। अभी तक आत्मा का 'डायरेक्ट' शुद्ध उपयोग था ही नहीं। प्रकृति जिस तरह नचाती थी, आप वैसे ही नाचते थे और फिर कहते थे कि मैं नाचा! मैंने दान दिया, मैंने ऐसा किया, वैसा किया, इतनी सेवा की। अब आपको आत्मा प्राप्त हो गया है, इसलिए आपको उपयोग में रहना है। अब आप पुरुष हुए हैं और आपकी प्रकृति अलग हो गई है। प्रकृति अपना रोल अदा किए बिना रहेगी नहीं, वह नहीं छोड़ेगी और आपको, पुरुष को, पुरुषार्थ करना है। 'ज्ञानी पुरुष' ने जो आज्ञा दी है, उनमें रहना है। उपयोग में रहना है।

उपयोग यानी क्या? यूं बाहर निकले और गधे जा रहे हों, कुत्ते जा रहे हों, बिल्लियां जा रही हों और हम उन्हें देखे बिना यूं ही चलते रहें, तो कहा जाएगा कि अपना उपयोग बेकार गया। उसमें उपयोग देकर उनमें आत्मा देखते-देखते जाएँगे तो वह शुद्धउपयोग कहा जाएगा। यदि कोई 1 घंटे तक ऐसा शुद्ध उपयोग रखे तो उसे इंद्र का अवतार मिलेगा। इतनी अधिक कीमती चीज़ है यह।

प्रश्नकर्ता : क्या व्यवहार में, व्यापार में शुद्ध उपयोग रह सकता है?

दादाश्री : व्यवहार का और शुद्ध उपयोग का कोई लेना देना ही नहीं है। व्यापार कर रहा हो या चाहे कुछ भी कर रहा हो लेकिन स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करने के बाद खुद पुरुष होने के बाद में फिर शुद्ध उपयोग रहता है। स्वरूप ज्ञान की प्राप्ति से पहले किसी को शुद्ध उपयोग नहीं रह सकता। अब आप शुद्ध उपयोग रख सकते हैं।

प्रश्नकर्ता : यानी कि अगर गधे को हम परमात्मा की तरह देखें, परमात्मा मानें तो.....

दादाश्री : नहीं-नहीं। परमात्मा नहीं मानना है परमात्मा तो अंदर जो बैठे हुए हैं, वे परमात्मा हैं। और जो बाहर बैठा है वह गधा है। उस गधे पर हमें बोरी रखकर और अंदर वाले परमात्मा को देख कर चलना है।

पत्नी में परमात्मा देखकर व्यवहार करना है। वरना यदि शादी की हुई हो तो क्या बैरागी हो जाना है? ये जवान लड़के क्या बैरागी हो जाएँगे? नहीं-नहीं बैरागी नहीं होना है। अंदर भगवान देखो। भगवान क्या कहते हैं कि मेरे दर्शन करो। मुझे और किसी चीज़ की नहीं पड़ी है। मुझे कोई हर्ज़ नहीं है। व्यवहार, व्यवहार में बरतता है, उसमें मुझे देखो, शुद्ध उपयोग रखो।

प्रश्नकर्ता : यदि पेकिंग को पीड़ा हो तो उसका क्या?

दादाश्री : पीड़ा किसी को भी नहीं होती। गधे पर बोरी रखते हो तब भी उसे पीड़ा नहीं होती और अगर नहीं रखोगे तब भी पीड़ा नहीं होती। गधे को तो हम बहुत अच्छी तरह पहचानते हैं। हम कॉन्ट्रैक्ट का व्यवसाय करते हैं इसीलिए हमारे यहाँ 200 - 200 गधे काम करने के लिए आते हैं। जब इस तरह से कान गिरा देते हैं तब हम समझ जाते हैं कि इतना ज्यादा वजन उठाया है, फिर भी मस्ती में ही हैं। उनकी मस्ती को वे ही जानेंजाएँगे। आपको उसका क्या पता चले!!

मैंने आपको यह ज्ञान दिया है और इसलिए अब आप शुद्धात्मा हो गए हो। यानी कि ये मन-वचन-काया और 'चंदू भाई' के नाम की जो-जो माया है, वह सब 'व्यवस्थित' के ताबे में हैं। 'व्यवस्थित' अंदर से प्रेरणा देगा। अतः आप तो अब, 'मैं शुद्धात्मा हूँ,' में ही रहना और इन चंदू भाई का क्या होता है, चंदू भाई क्या करते हैं, वह आप देखते रहो। बस इतना हो गया तो आप पूर्ण हो गए। दोनों अपना-अपना काम करते रहें, 'चंदू भाई' 'चंदू भाई' का काम करें। उसमें आप दखल मत करो।

विषय कषाय रहित उपयोग के लिए

बात को बैठकर समझने की ज़रूरत है। कुछ भी करने की ज़रूरत नहीं है। आपकी दृष्टि बदल गई है। अब दृष्टि बदलने के बाद में फिर क्या करना है? 'मैं शुद्धात्मा हूँ' वह दृष्टि रखना, वही शुद्ध उपयोग है। सामनेवाले में शुद्धात्मा देखना, वही शुद्ध उपयोग है। अब शुद्ध उपयोग रखो।

यदि शुद्ध उपयोग नहीं रह पाता तो कषाय और विषय से रहित उपयोग रखो अर्थात् जिसमें विषय और कषाय आँ। वहाँ पर उपयोग रखो। विषय की वृत्तियों से और कषाय की वृत्तियों से बाहर, उसे उपयोग कहा गया है। अतः अपने ये पद विषय और कषाय से रहित कहे जाते हैं। फिर यह जो चरण विधि करते हैं, वह भी विषय कषाय रहित कहलाती है। और त्रिमंत्रों में भी यह परिणाम बहुत अच्छा रहता है।

यूँ जब अकेले होते हैं, तो उपयोग नहीं रहता। लेकिन जब सब एक साथ हों और इस तरह त्रिमंत्र बुलवाँ, तब उपयोग में रह पाते हो? इसलिए हमें उपयोग में रहना ही चाहिए। यह संयोग बल्कि अच्छा आया है, उपयोग रखने का। आपको क्या लगता है?

प्रश्नकर्ता : सही है।

दादाश्री : यह जो दबाव आया है न, इसलिए उपयोग रखने का संयोग बैठा, तो बहुत आनंद होना चाहिए कि 'चलो, अच्छा दबाव आया'। सामयिक नहीं हो पाती हो, तो मत करना। और अगर करे तब तो अच्छा है। कोई भी चीज़ करो तो सतर्कता पूर्वक अच्छी तरह करना और उस चीज़ के प्रति सिन्सियर रहना। हाँ, लेकिन रहना ही चाहिए ना। यहाँ पर बैठे हैं तो टाइम तो सत्संग में ही जाता है न! और उपयोग में रहने के लिए हम दूँढते रहते हैं कि उपयोग में रह पाँ ऐसा कुछ है क्या? उपयोग में रहना के लिए तो ये त्रिमंत्र बुलवाने हैं, तो उपयोग में रहा जा सकेगा। और अपने यहाँ सभी साधन उपयोग में रखने के लिए ही हैं। इसीलिए तो हमने कहा है कि ये पद गाओगे न तो व्यवहार और निश्चय दोनों साथ में चलेंगे और पद सारे ही मज़ेदार हैं फिर। ऐसे नहीं है कि बोर हो जाँ।

प्रश्नकर्ता : ये पद गाते समय खुद शब्द बोलता है लेकिन भाव कहीं और हो तो वह क्या कहा जाएगा?

दादाश्री : वह सारा 'मेकेनिकल' कहा जाएगा। 'मेकेनिकल' अर्थात् उपयोग रहित और यदि उपयोग पूर्वक कार्य हो तो वह जागृति कहलाता है।

शुद्ध उपयोग में रहने के लिए

यहाँ से जाते हुए भी रिलेटिव-रियल देखते-देखते जाना। तो यह शुद्ध उपयोग रहेगा। अपने जो पांच वाक्य हैं, वे तो निरे शुद्ध उपयोग के लिए ही हैं। 'ज्ञानी पुरुष' की आज्ञा में उपयोग रहा, 'रियल' और 'रिलेटिव' देखते-देखते चलोगे तो समझना कि अंतिम दशा आ गई। यह तो रास्ते में ताकझांक करता है कि 'स्टील ट्रेडिंग कंपनी', फलानी कंपनी, देखो यह कैसा है।' इस तरह दूसरे उपयोग में रहे, तो वह अशुभ उपयोग कहा जाएगा और उपयोग यदि धर्म के लिए हो तो अच्छा है। और शुद्ध उपयोग की तो बात ही अलग है न!

प्रश्नकर्ता : लेकिन यदि नहीं रह पाए तो उसका क्या?

दादाश्री : वह तो खुद जरा चिमटी भरनी चाहिए। इस तरह, यदि नींद आ रही हो तो।

प्रश्नकर्ता : यदि चिमटी भरने जितनी भी जागृति नहीं हो तो?

दादाश्री : तब फिर मार पड़ेगी। ऐसा कहीं चलता होगा? जब बिच्छू काटते हैं तब क्यों जागृति आ जाती है?

उपयोग रखने की ज़रूरत

प्रश्नकर्ता : ऑफिस के कामों में पूरे दिन उपयोग चला जाता है, तो उसके लिए क्या करना चाहिए?

दादाश्री : फिर तनख्वाह देते हैं ना?

प्रश्नकर्ता : लेकिन हमें तो यह कर लेना है ना!

दादाश्री : तो तनख्वाह मत लेना। तनख्वाह लिए बगैर कोई चारा न हो तो उसे उसमें भी उपयोग रखना चाहिए और इसमें भी उपयोग रखना चाहिए। दोनों जगहों पर उपयोग रखना चाहिए। शुद्धात्मा का उपयोग कितने समय तक रहता है? एक घंटे तक, गुणस्थानक तो रहना ही चाहिए?

प्रश्नकर्ता : ऐसे कंटीन्यूअस नहीं रहता। टुकड़े-टुकड़े रहता है।

दादाश्री : हाँ, लेकिन उसे कंटीन्यूअस करने में हर्ज़ क्या है? एक गुणस्थानक करेगा तब भी बहुत हो गया। तब भी वह बहुत बड़ी पुण्या श्रावक की सामायिक कही जाएगी। श्रेणिक राजा को क्या कीमत बताई थी इसकी भगवान ने? कि 'तेरा राज्य तो दलाली में चला जाएगा।' बोलो कितनी कीमत? यहाँ पर तो आप सुबह सब्ज़ी लेने जाते हो तो ठेठ तक उपयोग रहा। हो सके उतना उपयोग रखने की ज़रूरत है। बस! तो हल्के फूल हो जाओगे। फिर अगले जन्म में थोड़ा बहुत करेंगे, तो जो बाकी बचा है वह खत्म हो जाएगा।

हरेक अवस्था, अच्छी या खराब छूटने के लिए ही आती है। वहाँ यदि हम उपयोग पूर्वक रहेंगे तो एकदम साफ हो जाएगा।

उपयोग के सेटिंग की एजैक्टनेस

लेकिन अब आपको उपयोग सेट करना पड़ेगा! यानी कि आत्मा आपको दिया है ,लेकिन आत्मा का उपयोग ऐसी चीज़ है कि.... स्लिप होने का उपयोग तो आसानी से उसे रहता ही है। यानी कि खुद इस उपयोग को सेट करना होगा उसकी जागृति रखनी पड़ेगी। पुरुषार्थ करना पड़ेगा। क्योंकि खुद पुरुष बना है।

अतः आत्मा का उपयोग हटने नहीं दे तो उसी को उपयोग जागृति कहते हैं। उपयोग किसे कहा जाता है? डेढ़ मील तक दोनों तरफ समुद्र हो और बीच में सिर्फ एक ही व्यक्ति चल सके, उतने सकड़े पुल पर से आपको चलने के लिए कहा जाए तो वहाँ पर चित्त हाज़िर रहेगा या नहीं? तो उस समय जो जागृति रखते हो उसे उपयोग कहते हैं। अब उस समय यदि बैंक का विचार आए कि इतनी रकम है और इतनी भरनी है तो उस विचार को तुरंत ही हटा देगा और जागृति को पुल पर चलने में ही 'कोंसेट्रेट' करेगा ! उसमें जागृति रहती है। मैंने ऐसा देखा है। वहाँ पर गिर नहीं पड़ता, यह बात पक्की है। छोटे बच्चे भी खेल को एक तरफ रख कर जागृत हो जाते हैं। वे भी बहुत पक्के होते हैं।

प्रश्नकर्ता : वहाँ पर बहुत सावधानी रहती है।

दादाश्री : क्योंकि उसमें मृत्यु का प्रत्यक्ष फल है जबकि यह फल तो गुप्त रहा हुआ है, क्या मिलेगा वह क्या कह सकते हैं? बाकी इसका भी प्रत्यक्ष फल मोक्ष है।

शास्त्रकारों ने कहा है कि उपयोग रखो। खाते समय, पीते समय, हर काम करते समय उपयोग में रहो। उपयोग अर्थात् खाते समय कुछ और हो। चित्त को हाज़िर रखने को ही कहते हैं उपयोग।

छूटने का दृढ़ निश्चय

अगर दखलअंदाजी करने की आदत हो तो कुछ समय के लिए उपयोग चूक जाता है।

प्रश्नकर्ता : वह तो दखल कर आता है लेकिन ऐसा सब जो होता है, 'छूट जाना है, अब यह फाइल मुझे नहीं चाहिए', वह उपयोग है या क्या है?

दादाश्री : 'छूट जाना है', वह तो जागृति में आता है। 'छूट जाना है' वह जागृति रूपक में आ जाए, ऐसा होना चाहिए। 'छूट जाना है' वह कैसा रहना चाहिए? ऐसा पुल जिसके दोनों तरफ रेलिंग नहीं हो, और उस पर से जाना हो न, तो वहाँ कैसी जागृति पूर्वक चलता है? ऐसी जागृति रहनी चाहिए। तब मन को कितना मज़बूत करना पड़ता है? मन विचलित हो जाए तो उस पर भी ध्यान नहीं देना चाहिए। ऐसा हो तो जल्दी छूट सकेंगे वरना यदि ज़रा दखल वाला होगा तो देर लगेगी।

प्रश्नकर्ता : क्या इसका मतलब यह हुआ कि मन को इतना मज़बूत करना चाहिए?

दादाश्री : लेकिन मन अभी मज़बूत नहीं हो सकता ना। मन ऐसा कैसे हो पाएगा? जो मज़बूत करके लाए हैं, उनकी बात अलग है। लेकिन वह तो मज़बूत नहीं होता। इसलिए फिर जागृति बहुत ज्यादा रखनी चाहिए। मन का बिल्कुल भी नहीं सुनना चाहिए। मन भय बताए कि 'ऐसा हो जाएगा, वैसा हो जाएगा'। लेकिन कुछ भी नहीं सुनना चाहिए। जब ऐसी जागृति रखेगा तब छूट पाएगा।

वर्ना असर क्यों हो?

प्रश्नकर्ता : रियल-रिलेटिव देख रहे होते हैं लेकिन न जाने कौन सी घड़ी किसी रिलेटिव में खो जाते हैं तो पूरी परिणीति डाउन हो जाती है।

दादाश्री : तो परिणीति डाउन हो ही जाएगी ना!

प्रश्नकर्ता : इतना अधिक स्लिपरी है अभी का वातावरण।

दादाश्री : वातावरण तो है लेकिन वातावरण का और अपना क्या लेना देना? अपनी लालच है, कोई न कोई लालच हो तभी वातावरण का असर होता है। शुद्ध उपयोगी को इस दुनिया में कोई भी चीज़ छू सके ऐसा नहीं है।

प्रश्नकर्ता : दादा, हमारा कैसा होना चाहिए अंदर?

दादाश्री : अपने पर वातावरण का असर नहीं होना चाहिए, वातावरण-प्रूफ हो जाना चाहिए।

...वहाँ पर उपयोग चूक जाते हैं

प्रश्नकर्ता : और यह जो उपयोग चूक जाते हैं उसका क्या कारण है?

दादाश्री : वह लालच है किसी तरह की। लोभ, लालच, किसी इच्छा और प्रमाद के कारण उपयोग चूक जाते हैं। खुद के उपयोग में कब रहा जा सकता है? जब सभी इच्छाएँ बंद हो जाएँ, तब।

आज अगर ज्यादा खा लें, तो उपयोग चूक जाएँगे। खीर ज़रा ज्यादा खा ली हो और फिर उसे उपयोग रखना हो, तब भी नींद आती रहेगी, बेचैनी रहा करेगी। आप जब खीर ज्यादा खा लेते हो तब क्या होता है? ऐसा ही हो जाता है। नहीं? क्या होता है?

प्रश्नकर्ता : उपयोग नहीं रहता है ठीक से।

दादाश्री : कभी कोई उतावला इंसान यदि ज्ञान पाए, तब भी शुद्ध उपयोग नहीं रह पाता। यदि उतावले व्यक्ति को 'शुद्ध उपयोग' दें, तब भी के पास रह नहीं पाता क्योंकि उतावला है ना! आप यह सब खाते-पीते हो, घूमते-फिरते हो, लेकिन उपयोग पूर्वक करते हो। यह उतावला इंसान जनता है कि, 'इसमें तो शुद्ध उपयोग चला जाता है।' लेकिन नहीं, शुद्ध उपयोग तो रहता ही है। चाय अच्छी है या नहीं है, कड़क है या मीठी है, जब यह जानते हो तब अपना शुद्ध उपयोग रहता ही है।

‘दादाई’ अगियारस

ये जो अगियारस करते हैं ,वह भी साइंटिफिक है। यह ‘दादा’ की अगियारस यदि जिंदगी में एक बार करे तो उसका कल्याण हो जाए, ऐसा है। एक बार ‘दादा’ के तरीके से होनी चाहिए ।

प्रश्नकर्ता : दादा की अगियारस किस तरह से करनी?

दादाश्री : पांच कर्म इन्द्रियाँ, पांच ज्ञानेंद्रियाँ और ग्यारहवाँ मन, इन्हें निराहारी रखना। आँख, कान, मुँह, स्पर्श, इन इंद्रियों को, और हाथ-पैर, संडास इन सभी कर्मेन्द्रियों को, और ग्यारहवाँ मन; उन्हें एक दिन खुराक नहीं देनी है। कान से सुनाई तो देगा लेकिन हमें सुनने नहीं जाना है, आंखों से दिखाई देगा लेकिन हमें उठकर देखने नहीं जाना है। पूरा दिन कुछ भी नहीं करना है। मन को बिल्कुल भी खुराक नहीं देनी है।

प्रश्नकर्ता : चल फिर सकते हैं क्या?

दादाश्री: कुछ भी नहीं कर सकते।

प्रश्नकर्ता : सो सकते हैं?

दादाश्री : लेट सकते हैं।

प्रश्नकर्ता : अगर नींद आए तो?

दादाश्री: तो फिर बैठ जाना। चौबीस घंटे निरंतर जागृति में बिताना। इस तरह से अगर एक ही अगियारस करोगे तो आत्मा अलग ही हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : इसका पालन करना तो बहुत मुश्किल है।

दादाश्री : अगर आप निश्चय करोगे तो पालन कर पाओगे। आपका निश्चय और हमारा वचन बल होगा तो इसका पालन हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : उपवास करना हो तो आपकी आज्ञा लेकर करना चाहिए क्या?

दादाश्री: हम किसी को ऐसी आज्ञा नहीं देते हैं कि तू उपवास कर। लेकिन अगर आपको उपवास करना हो तो उसका निश्चय करके हमसे आज्ञा ले जाना। आज्ञा से, वचन बल से आपका काम पूरा होता है।

प्रश्नकर्ता : कभी जब 'दादा' यहाँ मुंबई में हाजिर नहीं हो और उपवास करने की इच्छा हो तो क्या आपके चित्रपट से आज्ञा ली जा सकती है?

दादाश्री : हाँ, आज्ञा लेकर करोगे तो हर्ज़ नहीं है। आपके बुलाने पर हाज़िर हो जाऊं, ऐसा हूँ, लेकिन आपको बुलाना नहीं आता है ना!

प्रश्नकर्ता : पांच कर्मेन्द्रियों का और पांच ज्ञानेन्द्रियों का तो समझ में आया लेकिन मन का क्या है दादा? वह तो भ्रमण करता ही है ना?

दादाश्री: भले ही भ्रमण करे। हमें उसे आहार नहीं देना है, उसे निराहार ही रखना है। फिर वह उछल कूद करे या बैठा रहे, लेकिन हमें उसे आहार नहीं देना है। हाथ को आहार नहीं देना है। आंखों को आहार नहीं देना है, उस दिन बैठ जाना है। और फिर पैरों को आहार नहीं देना है। किताब लेकर नहीं बैठना है और 'दादा, दादा' बोलते रहना है। वह भी मुँह से नहीं बोलना है, मन में 'दादा' का स्मरण चलता ही रहे। यदि ऐसी एक अगियारास करें तो एक साथ फल मिल जाएगा। यह तो अगियारास करते हैं, फिर भी मोरधान और लड्डू और फिर भी घी की पूरियाँ, कढ़ी-सब्जी अलग-अलग तरह की, तो बल्कि उस दिन और ज्यादा खाता है।

प्रश्नकर्ता : यदि अपने स्वरूप ज्ञान प्राप्त महात्मा उपवास करें तो?

दादाश्री : बहुत फायदा होगा। एक उपवास से पूरे साल का फल मिलेगा, लेकिन बहुत जागृति रखनी पड़ेगी।

भगवान ने कहा है कि एक उपवास भी यदि शुद्ध उपयोग पूर्वक हो तो पूरे साल का शुद्ध उपयोग हो जाएगा। उपवास के लिए पिछली रात से ही ताला लगा देना चाहिए। रात को निश्चय करके सो जाए कि कल शुद्ध उपयोग पूर्वक उपवास करना है। हमारी आज्ञा ले, उसके बाद से 'मैं शुद्धात्मा हूँ, मैं शुद्धात्मा हूँ' के लक्ष्य में पूरा दिन रहे और हमारी पाँच आज्ञा में रहे। इस अनुसार छत्तीस घंटे मुंह पर ताला लगाकर उपवास करे तो पूरे साल का शुद्ध उपयोग उसे प्राप्त हो जाएगा।

जहाँ कषाय है, वहाँ अजागृति!

प्रश्नकर्ता : अगर व्यवहार में हँसते वगैरह रहते हैं, पौद्गलिक आनंद लेते रहते हैं तो वह डाउन हो जाता है. खुद अगर सुपरफ्लुअस, ड्रामेटिक रहे तो उसका असर नहीं होता है ।

दादाश्री: उपयोग नहीं रहता इसलिए डाउन हो जाता है । अगर उपयोग होगा तो डाउन नहीं होगा। इसलिए हम कहते हैं न कि दिनभर उपयोग रहना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : अगर ये दोनों झगड़ा कर रहे हों, तो यह करनेवाला कौन है, कौनसी सत्ता, यदि ऐसा दूसरे का देखना हो तो ऐसा शुद्ध उपयोग रहता है लेकिन जब खुद इंटरफियर हो जाए, तो पता नहीं चलता।

दादाश्री : वही कषाय है। कषाय उसे कहते हैं जो खुद की सत्ता बंद करवा दे। हाँ, अगर बहुत उपयोग वाला इंसान हो तो जागृति आ जाती है। जागृति आती ज़रूर है, कुछ दो-तीन घंटों में, चार घंटों में या आठ घंटों में। वर्ना कषाय तो मूल चीज़ देखने ही नहीं देते। इसलिए उन्हें कषाय कहा है, भगवान ने।

वह कहलाता है प्रमाद

शुद्ध उपयोग के अलावा दूसरा पुरुषार्थ नहीं है। शुद्ध उपयोग चूक जाने को प्रमाद कहा गया है। एक क्षण के लिए भी लापरवाह नहीं रहना चाहिए। यदि सामने से ट्रेन आ रही हो तो क्या लापरवाह रहते हो? जबकि यह तो अनंत जन्मों की भटकन है, इसमें लापरवाह कैसे रह सकते हो?

प्रमाद यानि क्या? इस जगत में प्रमाद में कौन है? पूरा जगत ही प्रमाद में है। यह प्रमाद कब जाता है? जब आरोपित भाव जाता है, तब प्रमाद जाता है। मद तो चढ़ा हुआ है और ऊपर से यह प्रमाद। एक तो आरोपित भाव है, 'मैं चंदू लाल हूँ', ऐसा मानता है, वह मद है और शादी में मज़े करता है, वह प्रमाद है। जो अवस्था है, अगर वह अच्छी हो तो आनंद भोगता है और अगर खराब हो तो व्याकुलता भुगतता है, यह प्रमाद है। आरोपित भाव में जो स्थिरता लाए, वह मद है और आरोपित भाव में जो रंजन करे, उसे प्रमाद कहा है।

वह सारा शुद्ध उपयोग ही

'शुद्ध उपयोग' यानि ऐसा भान होना कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ और यह मैं नहीं कर रहा हूँ लेकिन कोई और कर रहा है', जो खुद शुद्ध में रहे और सामनेवाले का शुद्धात्मा देखें। अगर कोई गाली दे, जेब कांट ले तब भी उसमें शुद्धात्मा ही देखें, वह शुद्ध उपयोग है! उसमें पूरा जगत निर्दोष दिखाई देता है। जब से 'मैं शुद्धात्मा हूँ' का लक्ष बैठ जाता है तब से शुद्ध उपयोग की शुरुआत हो जाती है और संपूर्ण शुद्ध उपयोग को केवल ज्ञान कहा है।

उपयोग की अखंडितता!

हम अपने मन को उपयोग रहित तो बिल्कुल रखते ही नहीं न? यानि कि अगर किसी जगह पर ज़रा भी कच्चा पड़ जाए तो वहाँ तुरंत ही कुछ सेट कर देते हैं। हमारा उपयोग दिनभर रहता है। जब पैर धुलवा रहे होते हैं तब भी हम किसी न किसी उपयोग में रहते हैं। क्योंकि पैरों में हमारी ज़रूरत नहीं है इसलिए हम किसी उपयोग में रहते हैं।

जब हम मोटर में घूमते हैं तब भी किसी से बात नहीं करते, क्योंकि हम उपयोग में ही रहते हैं। हम उपयोग ज़रा भी नहीं चूकते!

इतना अच्छा विज्ञान हाथ में आ जाने के बाद, कौन छोड़ेगा? पहले तो पाँच मिनट भी उपयोग में नहीं रह पाते थे। यदि एक गुणस्थानक सामायिक करनी हो तब भी महा महा कष्ट से रह पाते थे जब कि यह तो सहज रूप से, आप जहाँ जाओ वहाँ उपयोग पूर्वक रह सकते हो, ऐसा हो गया है!

प्रश्नकर्ता : यह समझ में आ रहा है, दादा।

दादाश्री: अब अगर कभी ज़रा भी भूल जाओ तो प्रतिक्रमण करना। आप निश्चय करके निकलना कि आज ऐसा ही करना है! शुद्ध उपयोग में रहना है। यदि ऐसा निश्चय नहीं करोगे तो उपयोग चूक जाओगे। और अपना विज्ञान तो बहुत अच्छा है। नहीं है और कोई झंझट।

दोष दर्शन, उपयोग से

प्रश्नकर्ता : क्या याद करके पिछले दोष देख सकते हैं?

दादाश्री : वास्तव में, पिछले दोष उपयोग से ही दिखाई देते हैं। याद करने से नहीं दिखाई देते। याद करने में तो सिर खुजलाना पड़ता है। आवरण आ जाता है, इसलिए याद करना पड़ता है न? अगर इन मगन भाई के साथ झंझट हुई हो और यदि मगन भाई का प्रतिक्रमण करोगे तो मगन भाई हाज़िर हो ही जाएँगे। हमें यूँ सामने फोटो दिखाई देगा। बस ऐसा उपयोग ही रखना है। अपने मार्ग में याद करने जैसा कुछ है ही नहीं। याद करना, वह तो 'मेमरी' के अधीन है।

प्रश्नकर्ता : क्या 'मेमोरी' बुद्धि के अधीन कहलाती है?

दादाश्री: 'मेमोरी' यानि बड़ा आवरण होता है। अगर बड़ा बादल छ जाए, तो एक घंटे तक याद नहीं आता और कभी पाँच मिनट में ही दिख जाता है, दो मिनट में भी दिख जाता है। क्या याददाश्त का ऐसा अनुभव आपको नहीं हुआ है?

प्रश्नकर्ता : हुआ है।

दादाश्री : कई बार घंटों तक ठिकाना नहीं पड़ता। अब नियम ऐसा है कि एकाग्रता से आवरण टूट जाते हैं। एकाग्रता से जो आधे घंटे का आवरण पाँच मिनट में खत्म हो जाता है।

एनालिसिस भी उपयोग है

प्रश्नकर्ता : मान लो, यदि आत्महेतु के लिए, हम अपनी भूलें देखकर उसका एनालिसिस करते हैं, तो वह क्या कहलाता है?

दादाश्री: वह तो अच्छी चीज़ है। वह भी उपयोग कहलाता है। यह उपयोग, शुद्ध उपयोग रखने के लिए रखा गया उपयोग कहलाता है।

तब कहलाती है जागृति !

जब खुद के दोष दिखाई दें तो जानना कि जागृत हुआ है वर्ना सब नींद में ही चल रहे हैं। सभी दोष खत्म हुए या नहीं, उसकी बहुत चिंता करने जैसा नहीं है, लेकिन मुख्य ज़रूरत जागृति की है। जागृति आने के बाद नए दोष नहीं होंगे और जो पुराने दोष हैं, वे निकलते रहेंगे। आप उन दोषों को देखो कि किस-किस तरह से दोष हो जाते हैं।

जब खुद के दोष दिखाई दें तब समझना कि मोक्ष में जाने की तैयारी हो गई है। जागृति के बगैर किसी को खुद का दोष दिखाई नहीं देता। यदि सामनेवाले के दोष बताने हों तो दो सौ-पाँच सौ बता देता है। यदि हमारे दोष किसी का नुकसान कर रहे हों तो 'हमें' 'चंदू भाई' से कहना चाहिए कि, 'प्रतिक्रमण करो'। किसी को किंचितमात्र दुःख देकर कोई मोक्ष में नहीं गया है। रोज़ यदि आम का रस और पूडियाँ खाते हो तो उसमें हर्ज़ नहीं है, लेकिन दुःख देकर मोक्ष में जाएँगे, ऐसा नहीं हो सकता। यहाँ 'क्या खाते हो, पीते हो', वहाँ उसकी कीमत नहीं है लेकिन वहाँ तो सिर्फ़ कषाय से आपत्ति है और अजागृति नहीं रहनी चाहिए। जगत सोया हुआ क्यों कहा जाता है? क्योंकि 'स्व' का भान नहीं है, खुद के स्व का और दूसरों के हित-अहित का भान नहीं रहा है। मोक्ष के लिए कषाय से आपत्ति है।

'हमने' ऐसे किये थे विश्व के प्रतिक्रमण

जितनी भूलें खत्म की प्रतिक्रमण से, उतना मोक्ष करीब आया।

जब भी खाली बैठे हो तब चिकनी फाइलों के प्रतिक्रमण करते रहना। 'आप' को 'चंदू भाई' से इतना कहना पड़ेगा कि प्रतिक्रमण करते रहो। आपसे घर के सभी व्यक्तियों को पहले कुछ न कुछ दुःख हुआ होगा, तो आप उसके प्रतिक्रमण करना, 'संख्यात या असंख्यात जन्मों में राग-द्वेष, विषय, कषाय से जो दोष किये हों, उसके लिए मैं क्षमा मांगता हूँ', ऐसा हररोज़ एक-एक व्यक्ति का, ऐसा घर के हरेक व्यक्ति

को लेकर करना। फिर आसपास के, अड़ोस-पड़ोस के, सब को लेकर उपयोग सेट करना, ऐसा करते रहना चाहिए। अगर आप करोगे तो आप का बोझ हल्का हो जाएगा। यूँ ही हल्का नहीं होगा।

आपके मदर, फादर, भाई, बहन, सबका हर रोज़ प्रतिक्रमण करना पड़ेगा, परिवार वालो का सबका। क्योंकि उनके साथ बहुत चिकनी फाइल होती है। इसलिए अगर प्रतिक्रमण करोगे न, परिवार वालो को याद करके, नज़दीक से लेकर दूर वालों का, सब का, उनके भाई, वाई, उनके चाचा, चाचा के बेटे, उन सबका, एक फेमिली (परिवार) हो न, तो दो-तीन-चार पीढ़ी तक सब को याद करके, यदि हरेक का एक घंटे तक प्रतिक्रमण होगा न, तो अंदर ज़बरदस्त पाप भस्मीभूत हो जाएँगे। और हमारी तरफ से उन लोगो के लिए मन साफ हो जाएगा। यदि रात को नींद नहीं आ रही हो और उस समय यह सेट कर दोगे तो चलता रहेगा। ऐसा सेट नहीं करते हो? ऐसी यह सेटिंग, यदि यह फिल्म शुरू हो जाएगी तो उस समय बहुत आनंद आएगा। वह आनंद समाएगा नहीं।

क्योंकि जब प्रतिक्रमण करते हैं न, तब आत्मा का संपूर्ण उपयोग रहता है। बीच में किसी की दखल नहीं रहती। आज रात को करना और यदि समय कम पड़े तो कल रात को। यदि और कम पड़े तो परसों रात को। बस उतने तक ही नहीं लेकिन अपने गाँव में भी जिन्हें पहचानते हो, उन सबको याद करके प्रतिक्रमण करने चाहिए। यदि गाँव में किसी को ज़रा धक्का लगा हो और किसी के प्रति आक्रोश हुआ हो, तो वह सब साफ करना पड़ेगा न। सभी कागज़ यूँ साफ करने पड़ेंगे। दोपहर को आराम करते समय प्रतिक्रमण करना। इससे नींद भी नहीं आएगी और प्रतिक्रमण भी होंगे। और आराम भी होगा।

हमने पूरे जगत के साथ ऐसे निवारण किया था, तब जाकर छुटकारा हुआ। जब तक हमारा दोष आपके मन में है, तब तक वह हमें शांति से नहीं रहने देगा। इसलिए जब हम ऐसे प्रतिक्रमण करते हैं तब वह सब मिट जाता है।

प्रतिक्रमण, ज्ञानी के

जब आप गद्दे पर सो रहे हों, तब जहाँ-जहाँ कंकड़ चुभ रहे हों, उन्हें आप निकालते हो या नहीं निकालते? यह प्रतिक्रमण तो, जो-जो खटकता हो, उसी के करने चाहिए।

आपको जहाँ खटक रहा हो, वहाँ से आप निकाल देना और उन्हें जो खटक रहा होगा, उसे वे निकाल देंगे। हरेक व्यक्ति के प्रतिक्रमण अलग अलग होते हैं।

कोई इंसान किसी पर उपकार करता है, फिर भी उसके घर पर अनाचार हो जाता है। जब ऐसे केस होते हैं तब उसमें प्रतिक्रमण करने ही चाहिए। प्रतिक्रमण तो जहाँ भी खटकता हो, उन सब के करने चाहिए। लेकिन हरेक के प्रतिक्रमण अलग-अलग होते हैं।

मुझे भी प्रतिक्रमण करने पड़ते हैं। मेरे अलग तरह और आपके भी अलग तरह के होते हैं। मेरी भूल ऐसी नहीं होती कि आपको बुद्धि से पता चल सके। वे सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतर होती है। हमें उनके प्रतिक्रमण करने पड़ते हैं। हमें तो उपयोग चूक जाने के प्रतिक्रमण करने पड़ते हैं। हमारे लिए तो उपयोग चूक जाना चलेगा ही नहीं न। हमें इन सब से बात भी करनी पड़ती है, सवालों के जवाब भी देने पड़ते हैं, फिर भी हमें उपयोग में ही रहना पड़ता है।

जब तक हम में साहजिकता रहे, तब तक हमें प्रतिक्रमण नहीं करने पड़ते। साहजिकता में आपको भी प्रतिक्रमण नहीं करने पड़ेंगे। यदि साहजिकता में कमी हो तो प्रतिक्रमण करने पड़ेंगे। हमें आप जब भी देखो, तब साहजिकता में ही देखोगे। जब भी देखो तब हम उसी स्वाभाव में दिखते हैं। हमारी साहजिकता में फ़र्क नहीं पड़ता।

प्रत्येक व्यवहार में शुद्ध उपयोग!

प्रश्नकर्ता : जब हम आपसे प्रश्नोत्तरी करते हैं, तब आप किसमें रहते हैं?

दादाश्री: हम उसके ज्ञाता-द्रष्टा रहते हैं, वही हमारा उपयोग है। ये जो शब्द निकलते हैं, वह तो रिकॉर्ड बोलती है। हमें उससे कोई लेना-देना नहीं है। जब उस पर उपयोग रखते हैं तो पता चल जाता है कि कहाँ भूल हो गई और कहाँ उपयोग नहीं रख पाते हैं। यदि यह 'रिकॉर्ड' सुनोगे तो आप स्पष्ट समझ जाओगे कि इसमें यह भूल है और यह 'करेक्ट' है?!! वैसा ही हमें तब रहता है जब हमारी वाणी की 'रिकॉर्ड' चल रही होती है।

एट ए टाइम पाँचों इन्द्रियों पर उपयोग रखना, वही शुद्ध उपयोग है। यानी कि मन में तन्मयाकर परिणाम नहीं रहें, वाणी में तन्मयाकर परिणाम नहीं रहें और वर्तन में तन्मयाकर परिणाम नहीं रहें, वही शुद्ध उपयोग है।

प्रश्नकर्ता : क्या ऐसा कहा जाएगा कि जब आप ज्ञाता-द्रष्टा रहते हैं, उस समय स्व-उपयोग नहीं रहा?

दादाश्री : ज्ञाता-द्रष्टा रहना, वही स्व-उपयोग है और पर-उपयोग क्या है? 'मैं चंद्र लाला, मैं फलाना, मैं ज्ञानी हूँ', यह पर-उपयोग कहलाता है।

सेट करने से समझ में फिट हो जाएगा

सबसे अच्छा शुद्ध उपयोग कौन सा है? खुद अपने आप को शुद्ध देखना और अन्य जीवों को भी शुद्ध ही देखना, उसे कहते हैं शुद्ध उपयोग। वही सर्वोत्तम है। यदि आपका शुद्ध उपयोग हो, तो सामनेवाले का चाहे कैसा भी उपयोग हो, लेकिन आपको स्पर्श नहीं करेगा। यदि वह गाली दे रहा हो और आप वहाँ शुद्धात्मा ही देखते रहोगे तो आपका शुद्ध उपयोग नहीं चूकेगा। यह कौन कर रहा है? कर्ता कौन है? इसका निमित्त कौन है? जब यह सब ज्यों का त्यों एट ए टाइम रहेगा, तब वह शुद्ध उपयोग कहलाएगा। हाँ, यदि अधिक शक्ति न हो तब उस उपयोग में नीचे उतरना मुश्किल नहीं है, आसान है। नहीं?

प्रश्नकर्ता : समझ में आना चाहिए. यूँ आसान है।

दादाश्री: हाँ, बस समझ में आना चाहिए, और कुछ भी नहीं है। है आसान, लेकिन समझ में आना चाहिए। ऐसा बोलते रहने से कभी न कभी समझ में आ जाएगा, और शुरू हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : फिर समभाव ।

दादाश्री : हाँ, समभाव से निकाल करना है। अब समभाव से निकाल करना है, बस।

उपयोग के लिए पुरुषार्थ!

यदि 'समभाव से निकाल' करना आ जाए और 'व्यवस्थित' समझ में आ जाए, तब भी बहुत हो गया और 'निश्चय दृष्टि', वह तो हमें हर रोज़ एक-एक घंटे रखनी पड़ेगी। किसी इंसान को निश्चय दृष्टि दिन भर नहीं रह सकती। इंसान की इतनी ताकत नहीं है। वह इतना निर्मोही नहीं हो सकता। इंसान में इतना ज़्यादा निर्मोहीपना नहीं होता, इसलिए एकाध घंटा निकालना पड़ता है। जब सब्ज़ी लेने जाए तब व्यवहार-निश्चय देखकर वापस आना चाहिए। ऐसे कुछ भी बहाना करना, यदि सब्ज़ी नहीं ला रहे हो तब भी थैला लेकर सब्ज़ी लेने जाना और रास्ते में आते-जाते, दोनों समय हर, जगह निश्चय दृष्टि से देखना।

पैसे गिनते हुए, उपयोग खो दिया!

मान लो आप सब्ज़ी मार्केट में सब्ज़ी लेने गए हों, आपने दस का नोट दिया और सब्ज़ी दो रूपए की थी, तो आपको आठ रूपए वापस मिले। यदि आठ रूपए के सब चिल्लर पैसे मिले, तो आप क्या करोगे? उसे गिनोगे या तोलोगे?

प्रश्नकर्ता : कुछ नहीं करूँगा। सब इक्कठे करके ले लूँगा।

दादाश्री: लेकिन गिनने कब बैठोगे?

प्रश्नकर्ता : घर आकार गिनुँगा।

दादाश्री : जब आप गिनोगे और यदि कम होंगे तो क्या करोगे? किससे शिकायत करोगे? वहाँ मार्केट में ही गिनने नहीं बैठते? क्यों? जो घर आकर गिनता है, वह मूर्ख कहलाता है। उसके बजाय तो गिनना ही मत। वह सब्ज़ी वाली बहन कहती है, 'आप गिन लो, फिर यदि कम निकलेंगे तो मैं कुछ नहीं जानती।' और यदि आप वहाँ गिनने बैठ जाओगे, तब तो सामायिक हो गई ना।

हमारे साथ यदि ऐसा हो तो हम जानते हैं कि ऐसा एक्सीडेंट कभी नहीं हुआ है, और आज हो गया तो केस बाजू में रख तो। ऐसा केस होता है या नहीं? और यदि हो जाए

तो कैसे गिनने के लिए हम अपनी सामायिक क्यों बिगड़ें? यदि एक-एक पैसा गिनोगे तो सामायिक जाएगी न? क्योंकि, समय किसमें गया? कैसे गिनने में। क्या कैसे गिनने में ऐसे समय बिगाड़ना चाहिए?

किसी देहधारी का उपयोग न रहे, ऐसा नहीं हो सकता। कैसे गिनते समय, यदि पत्नी आ जाए, बेटी आ जाए, आ जाए आ जाए तब भी उसे वह देखता है लेकिन गौर नहीं करता। तब पत्नी कहती है कि, जब आप कैसे गिन रहे थे, तब हम आए थे, तब भी आपको हम दिखाई नहीं दिए?' तब वह कहता है, 'नहीं! मेरा ध्यान नहीं था!!' आखों से देखता है, फिर भी दिखाई नहीं देता, उसे कहते हैं उपयोग। ऐसा सब करे, लेकिन उपयोग शुद्धात्मा में ही रहना चाहिए।

इस तरह उपयोग नहीं बिगाड़ना चाहिए

जब कैसे गिनते हो, सौ-सौ की नोट, तब आपका उपयोग कैसा रहता है? क्या उस समय उपयोग चूक जाते हो? मैं तो कभी कैसे गिनने में उपयोग ही नहीं रखता। इसमें उपयोग रखना कैसे पुसाएगा? इसमें तो मेरा अत्यंत कीमती उपयोग बिगड़ जाएगा। इस तरह उपयोग बर्बाद हो जाता है, इसका किसी को पता ही नहीं चलता। आत्मा के संपूर्ण उपयोग का उल्टा ही इस्तेमाल हुआ है। जहाँ उपयोग रखने की ज़रूरत नहीं है, जहाँ उपयोग रखे बगैर चल सके ऐसा हो, वहा उपयोग रखता है और जहाँ उपयोग रखना है, उसका पता नहीं है।

अच्छी नींद आयी या नहीं, यदि इसमें उपयोग देना पड़े तो क्या होगा? नींद आएगी ही नहीं। गाड़ी चल रही हो और कोई व्यक्ति डिब्बे से उतरने की जल्दबाज़ी करने लगे, यदि वह डिब्बे में ऐसे दौड़ने लगे, तो क्या जल्दी पहुँच पाएगा? संसार में लोग इसी तरह दौड़ रहे हैं। ज़रा शांति रखो ना। स्थिरता से देखो।

प्रश्नकर्ता : क्या जागृति को स्थिर करने को उपयोग कहते हैं?

दादाश्री: हाँ। यदि आप मुझ से बातचीत कर रहे हो और आपका चित्त दूसरी जगह पर हो तो वह उपयोग नहीं कहलाएगा।

जहाँ शुद्ध उपयोग, वहाँ स्वसत्ता!

संसारी की किसी भी क्रिया में बुद्धि का ही उपयोग रहता है। और 'मैं शुद्धात्मा हूँ', वह ज्ञान उपयोग है। यदि किसी भी ज्ञान का सदुपयोग हो, तो वही ज्ञान, विज्ञान बन जाता है। और यदि दुरुपयोग हो तो ज्ञान, अज्ञान बन जाता है।

यदि प्रत्यक्ष 'ज्ञानी पुरुष' की आज्ञा का पालन किया जाय तो वह शुद्ध उपयोग कहलाता है। जहाँ शुद्ध उपयोग हो, वहाँ अविरति के साथ संवरपूर्वक निर्जरा होती रहती है।

पूरे जगत को यदि भगवत स्वरूप से समझें तो वह शुद्ध उपयोग कहलाता है।

अब आत्मा प्राप्त हो जाने के बाद क्या? जितना शुद्ध उपयोग रहता है, उतनी स्वसत्ता उत्पन्न होती है। और जब संपूर्ण स्वसत्ता उत्पन्न हो जाएगी तब भगवान बन जाएगा। स्वसत्ता किसमें है? जो भी भूल होती है, यदि उसमें जागृति रहती है, जो सचेत करता है, वह स्वसत्ता है। जो परसत्ता में कहीं भी दाखिल नहीं होता, वह स्वसत्ता है। एक घंटे शुद्धात्मा पद में बैठकर यदि प्रतिक्रमण करोगे तो स्वसत्ता का अनुभव होगा।

उपयोग में उपयोग, वही केवल ज्ञान!

अभी भी हमारा उपयोग शुद्धात्मा में है। चाहे आपसे बातें कर रहा हूँ या कुछ भी कर रहा हूँ, लेकिन हमारा उपयोग, उपयोग में रहता है। ये मन-वचन-काया जब अपना कार्य कर रहें हों, वहाँ भी उपयोग में उपयोग रख सकते हैं।

'ज्ञानी पुरुष' निरंतर शुद्ध उपयोग में ही रहते हैं। 'ज्ञानी' निर्ग्रथ होते हैं, इसलिए एक क्षण के लिए भी उनका उपयोग कहीं ठहरता नहीं है। जब आपकी मन की ग्रंथि फूटती है तो पौन घंटा, आधा घंटा, एक ही चीज़ में रहते हैं; जबकि 'ज्ञानी' एक क्षण के लिए भी कहीं ठहरते नहीं हैं, इसलिए उनका उपयोग निरंतर घूमता ही रहता है, उनका उपयोग बाहर नहीं जाता। 'ज्ञानी' गृहस्थ दशा में रहते हैं लेकिन गृहस्थी नहीं होते, निरंतर वीतरागता, यही उनका लक्षण है! हमें उपयोग में उपयोग रहता है। जब 'उपयोग' में 'उपयोग' रहे तब केवल ज्ञान!

प्रश्नकर्ता : आपने कहा कि आपका उपयोग में उपयोग रहता है, मतलब दो उपयोग हुए। तो कौनसा उपयोग कौन से उपयोग में रहता है?

दादाश्री : पहला उपयोग, जो शुद्ध उपयोग है, वह। वह उपयोग यानि खुद को शुद्ध देखना, दूसरों को शुद्ध देखना, आज्ञा में रहना, यह सब शुद्ध उपयोग कहलाता है। और उसमें शुद्ध उपयोग पर भी उपयोग रखते हैं कि शुद्ध उपयोग कैसा बरत रहा है। वह केवल ज्ञान कहलाता है। जबकि पहले वाला शुद्ध उपयोग कहलाता है। उपयोग, उपयोग में रहे, वह केवल ज्ञान है।

प्रश्नकर्ता : क्या उस उपयोग को ज्ञान स्वरूप कहा जा सकता है?

दादाश्री: शुद्ध उपयोग, ज्ञान स्वरूप कहा जाता है और उपयोग में उपयोग, विज्ञान स्वरूप कहा जाता है, केवल ज्ञान स्वरूप कहा जाता है। जो शुद्ध उपयोग की जागृति है, उस पर जागृति, वह केवल ज्ञान की जागृति है, अंतिम जागृति है। 'ज्ञानी' की जागृति को शुद्ध उपयोग कहा जाता है, और उस पर भी जागृति रहें तो वह केवल ज्ञान का उपयोग कहा जाता है। हमें जागृति पर जागृति रहती है, लेकिन जैसी तीर्थकरों को रहती है, उतनी ज़्यादा नहीं रहती।

प्रश्नकर्ता : जिस समय अन्तःकरण की क्रिया में उपयोग रहता है, ज्ञेय-ज्ञाता संबंध रहता है, उस समय खुद ज्ञाता और अन्तःकरण ज्ञेय रहता है, तब भी उपयोग केवल ज्ञान में रहता है?

दादाश्री : वह उपयोग उस ज्ञेय-ज्ञाता संबंध के उपयोग को 'जानता' है कि कितना उपयोग कच्चा रहा, कितना पक्का रहा। तीर्थकरों को ज्ञेय-ज्ञाता पर भी उपयोग रहता है, सब 'केवल' होता है।

प्रश्नकर्ता : यानि केवल ज्ञान में ज्ञेय से अलग हो गया, ऐसा कह सकते हैं?

दादाश्री: केवल ज्ञान में ज्ञेय से अलग ही रहता है। लेकिन ज्ञेय-ज्ञाता वाले संबंध में ज्ञेय से अलग नहीं हो पाता, उन में संबंध रहता है और उस संबंध को जानता है कि ऐसा संबंध है।

जब उपयोग उपयोग में रहता है यानि कि जागृति, जागृति में रहती है, बाहर नहीं जाती। बाहर जो दिखाई देता है, वह सहजरूप से दिखाई देता है।

नक्कीपने में स्ट्रोंग!

प्रश्नकर्ता : आपने 'ज्ञान' दिए लेकिन आपके जैसा शुद्ध उपयोग हमें नहीं रहता है।

दादाश्री : 'हमारी-आपकी' ऐसे तुलना करने की ज़रूरत ही नहीं है न! आप मन में ऐसी भावना रखना कि मुझे आपके जैसा शुद्ध उपयोग रखना है। लेकिन ऐसा तुरंत होगा नहीं न? यह कोई आसान चीज़ नहीं है। 'उपयोग में रहना है' ऐसा तय करे और फिर यदि नहीं रह सके तो बात अलग है। लेकिन 'रहना है' पक्का है। फिर भले 'प्राण जाए लेकिन उपयोग न चूके' ऐसा अपना स्ट्रोंग डिसेीजन होना चाहिए।

आपका जितना रहे, उतना सही। वैसा नहीं रह पाते तो थोड़े ही सूर सागर (बरोडा में एक तालाब) में कूद जाएँगे? अपना यह काम सूर सागर ढूँढने का धंधा नहीं है।

फिर जोखिमदारी ही नहीं

अब, 'मैं चंदू भाई हूँ, 'इस ज्ञान पर तो आपको शंका हुई न, या नहीं?

प्रश्नकर्ता : शंका हो गई? यानि मैं आत्मा रूप हूँ. और चंदू भाई पर-सत्ता है, पड़ौसी है।

दादाश्री: हाँ, चंदू भाई पड़ौसी है। यदि एक 'प्लॉट' हो और जब तक दो भाई साथ में हो तो तब तक पूरे 'प्लॉट' में जो कुछ भी होता है, उससे उन दोनों को नुकसान होगा। लेकिन फिर दोनों यदि बँटवाराकर लें कि इस तरफ चंदू भाई का और दूसरी तरफ दूसरे भाई का, तो बँटवारा करने के बाद, आप दूसरे हिस्से के लिए जिम्मेदार नहीं हो। उसी तरह आत्मा और अनात्मा का बँटवारा हो गया है। बीच में मैंने 'लाइन ऑफ डिमार्केशन' डाल दी है, 'एक्जेक्ट' डाल दी है। ऐसा विज्ञान मिला है इस काल में, हमें उसका लाभ ले लेना है।

आत्मा और अनात्मा, दोनों के बीच 'लाइन ऑफ डिमार्केशन' डाल दी है यानि अब आपका 'चंदू भाई' के साथ 'आपके' संबंध पड़ौसी का है। अब पड़ौसी जो भी गुनाह

करेगा, उसके गुनहगार आप नहीं हो। मालिकीपना नहीं है इसलिए गुनहगार नहीं हो। जब तक मालिकीपना है, तभी तक गुनाह कहा जाता है। मालिकीपना गया यानि अब गुनाह नहीं रहा।

यदि हम पूछें कि, 'आप नीचे देखकर क्यों चल रहे हो?' तब वह कहता है कि, 'अगर नहीं देखूंगा तो पैर के नीचे कीड़ा मर जाएगा!' फिर जब ऐसा पूछें कि 'तो क्या, यह पैर आपका है?' तब कहता है कि, 'हाँ भाई, पैर तो मेरा ही है ना!' ऐसा कहता है या नहीं?' ऐसा कहता है या नहीं? यानि 'यह पैर मेरा है तो पैर के नीचे यदि कोई कीड़ा मर जाए तो उसके लिए आप ज़िम्मेदार हो!'

और इस 'ज्ञान' के बाद 'यह शरीर मेरा नहीं है' ऐसा ज्ञान हाज़िर रहता है। यानि आपने मालिकीपना छोड़ दिया है। यह 'ज्ञान' देते समय मैं आपका सारा मालिकीपना ले लेता हूँ। यदि आप मालिकीपना फिर से ले लोगे तो उसका जोखिम उठाना पड़ेगा। लेकिन यदि आप मालिकीपना वापिस नहीं लोगे न, तो 'एक्जेक्ट' रहेगा। निरंतर भगवान महावीर जैसी दशा में रखे, ऐसा है यह विज्ञान ।

इसलिए यह बाहर का, शरीर का भाग जो भी करे, उसमें हमें बीच में नहीं पड़ना है, तो आप बिल्कुल जोखिमदार नहीं रहोगे। और कुछ कर भी नहीं सकते हैं। 'खुद' ऐसा मानता है कि 'खुद' कुछ कर सकता है, लेकिन वही नासमझी है, उससे अगला जन्म बिगाड़ता है।

...उसे कर्म नहीं छूते!

आप आत्मा हो, शुद्ध उपयोग में हो तो इससे कर्म नहीं बंधेंगे।

हम संपूर्ण शुद्ध उपयोगी हैं। एक महाराज ने हमसे पूछा कि, 'आप ऐसे मोटरों में घूमते हो, तो कितने ही जीव मर जाते हैं, तो क्या आपको दोष नहीं लगता?' मैंने उनसे कहा कि, 'महाराज, आपके शास्त्र क्या कहते हैं?'

"शुद्ध उपयोगी और समता धारी,
ज्ञान-ध्यान मनोहारी रे,
कर्म कलंकु दूर निवारी,
जीव वरे शिवनारी रे!"

हम शुद्ध उपयोगी हैं। क्या शुद्ध उपयोगी से हिंसा हो सकती है? नहीं। हमें दोष नहीं लगता, आपको लगता है। क्योंकि 'मैं महाराज हूँ, ये पैर मेरे हैं और मुझसे कीड़े मर गए,' ऐसा ज्ञान, ऐसा भान आपको निरंतर रहता है। अरे! नींद में भी रहता है। उससे आपको दोष लगता है। जबकि हम निरंतर शुद्ध उपयोग में ही रहते हैं। 'यह शरीर मेरा है' ऐसा हमें एक क्षण के लिए भी नहीं रहता। हमारा पूरा मालिकीभाव ही खत्म हो गया है। इसलिए हमें दोष नहीं लगता।

आपके पास एक प्लॉट हो और यदि आपने वह आठ दिनों पहले लल्लू भाई को बेच दिया हो, कागज़ात भी बनवा लिए हों और एक दिन पुलिस आपके घर हथकड़ी लेकर आए और कहे, "चलो चंदू भाई! आपको पुलिस स्टेशन चलना पड़ेगा. तब आप पूछोगे, "क्यों भाई, क्या गुनाह किया है मैंने?" और पुलिस कहती है, "आपके प्लॉट में दस लाख का दानचोरी का सोना मिला है. यही आपका गुनाह है. " तो आप तुरंत ही हाश! करके पुलिस को लल्लू भाई को प्लॉट बेचने के दस्तावेज़ दिखाओगे। इससे पुलिस समझ जाएगी और बल्कि आपसे माफ़ी मांगकर निकल जाएगी और लल्लू भाई के पास जाएगी।

ऐसा ही आपका है। इस शरीर के भी हम मालिक नहीं है। पूरे ब्रह्मांड के स्वामी हैं लेकिन एक प्लॉट का भी मालिकी भाई नहीं है। पूरे ब्रह्मांड को हिला दे ऐसी शक्ति है 'हम' में लेकिन ये अंबालाल मूल जी भाई में तो सिका हुआ पापड़ तोड़ने की भी शक्ति नहीं है।

अनुभव दशा की सीढ़ियाँ

'मैं शुद्धात्मा हूँ,' ऐसा लक्ष बैठ जाए, तभी से अनुभव की सीढ़ियाँ शुरू हो जाती हैं। यदि पैरों के नीचे कीड़ा मर जाए तो 'उसे' शंका होती है, निःशंकता नहीं रह सकती। इसलिए तब तक आपको 'चंदू लाल' से प्रतिक्रमण करवाने पड़ेंगे कि 'चंदू लाल, आपने कीड़े को कुचल दिया, इसलिए प्रतिक्रमण करो.' ऐसा करते-करते सूक्ष्म अनुभव की दशा प्राप्त होगी और खुद का स्वरूप अव्याबाध स्वरूप है, ऐसा लगेगा, दिखाई देगा और अनुभव में आएगा। उसके बाद शंका नहीं होगी। तब तक तो वह जप आत्मा, तप आत्मा, त्याग आत्मा, सत्य आत्मा में है, वह शुद्धात्मा में नहीं है। उसे श्रेणी नहीं कह सकते। इसलिए कहा नहीं जा सकता कि वह व्यक्ति मोक्ष में जाएगा या किस ओर जाएगा। शुद्धात्मा का लक्ष बैठ जाने के बाद सीढ़ी चढ़ने की शुरुआत होती है। उसके बाद, खुद का स्वरूप अव्याबाध है, सूक्ष्म है, अमूर्त है, ऐसा अनुभव होता जाता है।

प्रश्नकर्ता : अव्याबाध यानि क्या?

दादाश्री: अव्याबाध का अर्थ यह कि मेरा स्वरूप ऐसा है कि कभी किसी जीव को किंचितमात्र भी दुःख नहीं दे सकता और सामनेवाले का स्वरूप ऐसा है कि उसे कभी दुःख नहीं हो सकता; उसी तरह सामनेवाला भी हमें दुःख नहीं दे सकता, ऐसा अनुभव हो जाता है। सामनेवाले को उसका अनुभव नहीं है, लेकिन मुझे तो अनुभव हो गया है इसलिए ऐसी शंका नहीं रहती कि मुझसे किसीको दुःख होगा। जब तक ऐसी ज़रा भी शंका रहे कि सामनेवाले को मुझसे दुःख होता है, तो उसका प्रतिक्रमण करना, उस शंका का निवारण करना। और 'अपना' तो वही स्वरूप है; अव्याबाध! 'ज्ञानी पुरुष' ने जिस गद्दी पर बिठाया है, उस गद्दी पर बैठे-बैठे ऐसा करते रहना।

जहाँ संपूर्ण निज परिणति, वहाँ केवल ज्ञान

प्रश्नकर्ता : 'शुद्धात्मा निज परिणति नहीं है, ज्ञान ही निज परिणति है।' यह समझाइए।

दादाश्री: शुद्धात्मा निज परिणति नहीं है। शुद्धात्मा तो संज्ञा है। हमने आपको जो ज्ञान दिया है, वह ज्ञान और जब उस ज्ञान का उपयोग होता है तब वह निज परिणति में आता है।

केवल ज्ञान तो उसी को कहते हैं जहाँ पुद्गल परिणति बंद हो जाती है। सर्वथा निज परिणति को केवल ज्ञान कहते हैं। केवल दर्शन में निज परिणति उत्पन्न होती है। जब निज परिणति संपूर्ण हो जाती है, तब उसे केवल ज्ञान कहा जाता है। केवल दर्शन में निज परिणति उत्पन्न होती है और केवल ज्ञान में संपूर्ण होती है। निज परिणति उत्पन्न होने के बाद वह क्रमशः बढ़ती जाती है और केवल ज्ञान स्वरूप में परिणामित होती है। निज परिणति आत्मभावना है, 'मैं शुद्धात्मा हूँ' वह आत्मभावना नहीं है।

ज्ञान द्वारा, स्वसत्ता प्रकट होती है

मैंने आपमें आपकी परमात्मशक्ति 'ओपन' कर दी है। वही संपूर्ण सत्ता है। जिस सत्ता से कोई उठा से, उसे सत्ता कैसे कह सकते हैं? स्वसत्ता के सामने तो परमात्मा भी कुछ नहीं कह सकते। अभी आपके पास जो धन है, वह परमात्मा के पास भी नहीं है।

प्रश्नकर्ता : वह किस तरह से?

दादाश्री: परमात्मा के पास रिकॉर्ड नहीं है। बोलने-चलने की कोई और मेकेनिकल शक्ति नहीं है। इसलिए वह किसी का कुछ भी कल्याण नहीं कर सकती। जबकि आप स्वसत्ता से लोगों का कल्याण कर सकते हो। इसलिए बात को समझो। करना कुछ भी नहीं है, समझना है।

यदि कोई हमारा घोर अपमान करे तो दूसरे की सत्ता हम पर सवार नहीं हो जानी चाहिए। अपमान तो क्या लेकिन यदि कोई नाक काट ले तब भी दूसरों की सत्ता को मान्य मत करना। उसका असर नहीं होना चाहिए।

शरीर में से होने वाले स्पंदनों में, वाणी से होने वाले स्पंदनों में, और मन में कल्पित एक भी परमाणु में यदि उपयोग रखोगे तो मारे जाओगे, ऐसा समझना और वह कितने ही जन्म बिगाड़ देगा।

बाकी बची, परमाणुओं की शुद्धि

जहाँ निरंतर प्रतिक्रमण होते हैं, वहा आत्मा 'शुद्ध' ही रहता है। हम तो दूसरों में शुद्धात्मा देखते हैं, प्रतिक्रमण करते हैं और खुद का शुद्धात्मा तो लक्ष में रहता ही है। यह व्यावहारिक क्रिया नहीं कहलाती, उससे फिर सब कुछ शुद्ध होता ही रहता है। यह पुद्गल क्या कहता है? हमें 'शुद्ध' करो, 'आप' तो 'शुद्ध' हो गए! यह अशुद्ध पुद्गल निकल रहा है और जब प्रतिक्रमण करते हैं, तो उससे शुद्ध हो जाता है।

शुद्ध उपयोग यानि खुद ज्ञाता-द्रष्टा रहता है। फिर और क्या चाहिए? शुद्ध व्यवहार चाहिए।

सत्संग से होता है ज्ञान निरावृत

केवल ज्ञान भीतर सत्ता में पड़ा है, लेकिन आज उपयोग नहीं हो रहा है। यह जो सत्संग करते हैं, इससे उसे व्यक्त करते हैं। एक दिन संपूर्ण निरावृत हो जाएगा यानि संपूर्ण व्यक्त हो जाएगा! फिर मेरी तरह आपका आनंद भी जाएगा ही नहीं। अगर आप कहोगे कि, जा इधर से, तब भी वह नहीं जाएगा।

वीतरागो के ये शब्द तो ऐसे हैं कि यदि एक-एक शब्द को समझे, सिर्फ़ अर्थ समझे, 'फुल डेफीनेशन' समझे, तो काम निकाल दे।

- जय सच्चीदानंद